Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 2 || February 2026 || DOI: 10.5281/zenodo.18797908

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पहल अतीत और वर्तमान के बीच सेतु

डॉ. संजू[1]

सारांश :– भारत में शिक्षा की उत्पत्ति वैदिक युग से हुई है, प्राचीन साहित्यों जैसे वेद, उपनिषद आदि का ज्ञान ऋषिमुनियों के द्वारा प्राप्त होता रहा है एवं अनेक विद्वानों द्वारा ज्ञान का प्रसार किया गया जिसमें चरक सुश्रुत, आर्यभट्ट प्रमुख रहे, भारतीय शिक्षा परंपरा आत्मज्ञान के साथ–साथ गुरू व शिष्य का संबंध हमेशा सर्वाधिक रोचक व महत्वपूर्ण सभ्यता को दर्शाती है, शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपना आजीविका का उत्तम साधन प्राप्त करता है, शिक्षा जीवन यापन करने वाला एक सही मार्ग प्रसस्त करता है शिक्षा मनुष्य का शाररिक, मानसिक व बौद्धिक उत्थान का प्रमुख साधन है शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन परंपरा में गुरू शिष्य को ज्ञान देते आया है, साथ ही शिष्य का परीक्षा की भी व्यवस्था हुआ करती थी जिसमें गुरूओं द्वारा शिष्यों का मानसिक परीक्षा होता था, शिक्षा प्रणाली व्यवस्था का एक तरफ परिवर्ततन होता जा रहा साथ ही भारत सरकार द्वारा शिक्षा में हर प्रकार का बुनियादी ढांचा तैयार कर छात्र–छात्राओं के हित को ध्यान में रखते हुए अनेको सुधार के प्रयास पर तत्तपर है, व छात्र हित से देश समाज में बदलाव व परिवर्तन आवश्यक है राष्ट्रीय शिक्षा नीति से देश की युवा पीढी को नई ज्ञान व तकनीक से जोड़कर उनके अगामी भविष्य में सुधारात्मक बदलाव की ओर बढ़ रही है साथ ही उनकी बौद्धिक विकास में बढोतरी हो रही है भारतीय ज्ञान व प्राचीन कला का समावेश होने के कारण नई तकनीक का प्रादूर्भाव हो रहा है जिसके कारण नई शिक्षा नीति आज पूरे भारत वर्ष में शिक्षा की व्यवस्था को विकसित कर रही है भारत में समग्र एवं मीश्रित विषयों के ज्ञान अर्जन से विज्ञान की समृद्ध व अनुशीलन मे शिक्षण व शिक्षा माध्यम में स्वदेशी ज्ञान एवं परम्परा को आगे बढ़या जा रहा है इसके साथ ही अन्य सुविधाएँ जैसे विभिन्न प्रकार के चैनल द्वारा शिक्षा व्यवस्था को गुणवत्ता पूर्ण बनाया जा रहा है।

महत्वपूर्ण शब्द – शिक्षा, शिक्षक, छात्र, सरकार, तकनीक परंपरा

प्रस्तावना :– शिक्षा यह हमें माता के समान संरक्षण व पिता के समान हित व दुखो को दूर करती है, साथ ही दुखो को दूर कर सुख पहुँचाती है, यश वैभव, का बहोतरी कर यह समान गुणकारी होती है, शिक्षा से हमे विद्या प्राप्त होती है, विद्या से विनय, विनय से निपुणता प्राप्त होता है व विद्या एक धन है जिसे खर्च करने पर भी बराबर बढ़ता रहता है, भारतीय शिक्षा शब्द के साथ कुछ अनोखा है, जो प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में शिक्षा के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है। अनूठी विशेषता यह है कि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के लिए उसे भौतिकवादी और आध्यात्मिक जीवन के लिए योगय बनाना है भारतीय शिक्षानीति काफी हद तक परंपरा पर आधारित है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही परंपराएं पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर चलती जा रहीं, है जो भारतीय सभ्यता को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सभ्यता बनाती है। साथ ही, परंपराओं में सुधार भी होते रहे हैं और भारतीय शिक्षा विकसित होता रहा है। प्राचीन भारतीय केवल प्रलेखित शिक्षा पर निर्भर नहीं थें, एक नया युग द्वापर युग शुरू हो चुका था कई वर्षो से चल रहे विश्वव्यापी गैर संधारणीय विकास को देखते हुए आधुनिक समय में भारतीय शिक्षा अधिक प्रासंगिक हो गया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में आई.के.एस. को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती है यह नीति पारंपरिक शिक्षा को समकालीन वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ एकीकृत करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है, कुछ संस्कृतियों और शिक्षा प्रणालियों के पक्ष समर्थकों ने अपने शिक्षा और

[1] ई.मेल- sanju281017@gmail.com

संस्कृति को सार्वभौमिक माना है और भारत के शिक्षा और संस्कृति को हीन माना है इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रतिष्ठित प्राचीन भारतीय दार्शनिक गौर गणितज्ञ नागार्जुन को भारत का आइंस्टीन कहता है जबकि आइंस्टीन का जन्म नागार्जुन के जन्म से लगभग 1600 साल बाद हुआ था। इसी तरह चाणक्य को भारत का मैकियावली कहा जाता है हालांकि मैकियावली का जन्म चाणक्य के जन्म से कई शताब्दियों बाद हुआ था, औपनिवेशिक शक्तियों ने भारतीय दर्शन परंपरा और साहित्य को निम्नतर दिखाने के एक सुनियोजित प्रयास के तहत इस धारण को कायम रखा है।

सुभाष रत्नसंदोह द्वारा प्रस्तुत – लेख में ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को जानने मे सहायता करता है तथा सही कार्य करने की विधि बताता है, प्राचीन भारतीयों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य का सर्वांगिण विकास का साधन है।

डॉ. भीम राव अम्बेड़कर द्वारा प्रस्तुत शब्द :– शिक्षा उस शेरनी का दूध है जो पिता है वह दहाड़ता है जो जितना ज्यादा पिता है वह उतना ज्यादा दहाड़ता है।

सावित्रीबाई फूले :– द्वारा उल्लेखित विचार मे शिक्षा को समाज में परिवर्तन लाने का एक शक्तिशाली साधन माना है, शिक्षा ही वह औजार है जिससे समाज को व वंचित वर्ग को स्वयं से अधिकार संपन्न बनाया जा सकता है, शिक्षा प्राप्त कर ही प्रत्येक व्यक्ति का विकास संभव है, अन्यथा विकास अवरूद्ध हो जाता है प्राचीन व वर्तमान परिदृश्य से देखा जाय तो अनेक विद्वान आये जिनके ज्ञान व विचार से समाज सुशोभित हुए साथ ही भारत की सरकार द्वारा भी अनको योजनाएँ लाई गई जिससे शिक्षा का स्तर और भी उंचा उठाया जा सके सरकार की अनेक समितीयाँ आये जिन्होने शिक्षा में अनेको सुधार कर सरल से सरल शिक्षा को आने वाली पिढ़ी तक पहँचाने पर प्रयासरत रहा, प्रारंभ में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत तीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रारभ हुई जिसमें पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री के समय आया जिसके अध्यक्ष डी.के. कोठारी से दूसरी शिक्षा प्रणाली 1986 में राजीव गांधी के शासन काल में आया तीसरी शिक्षा नीति 2020 में श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में आया जिसके अध्यक्ष के कस्तुरी रंगन है। नई शिक्षा प्रणाली की पहल से परिवर्तन करते हुए शैक्षिक अवसरो के साथ गुणवत्ता व अनुसंधान पर जोर देवे हुए 10+2 के स्थान पर 05+3 +4 प्रणाली को प्रारंभ किया गया, साथ ही छात्र व शिक्षक अनुपात सामान्यतः 30:1 से कम रखने का लक्ष्य है साथ ही वंचित एरिया में 25:1 की तैयार की गई तरकि SDG को पूरी तरह सफल किया जा सके।

उद्देश्य :–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को जमीनी स्तर तक पहुँच प्रदान करना।
2. 5वी कक्षा तक मातृभाषा में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति से शिक्षा को समग्र एवं लचीला बनाकर सहयोग प्राप्त करना।
4. उच्च शिक्षा व प्रशिक्षण पर अधिक जोर दिया गया।
5. सकल नामांकन GER को 2030 तक 100 % कराने का लक्ष्य।
6. शिक्षा के स्तर को 21वी शदी के अनुरूप बनाकर जन–जन तक पहुचाना।

शोध प्रविधी – शोध प्रविधी :– इस प्रविधी में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत का मिश्रण कर कार्य किया गया है।

प्राथमिक – ऐतिहासिक कानुनी दस्तावेज साख्यिकी डाटा का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक – शासकीय प्रतिवेदन

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भागीदारी :– भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में स्पष्ट है कि सार्वभौमिक, निशुल्क और अनिर्वाय शिक्षा देना केन्द्र व राज्य सरकार का उत्तर दायित्व है, शिक्षा नीति में जनता एवं छात्र छात्राओं व पालक का अधिक से अधिक भागीदारी बढाने के लिए संविधान में संशोधन कर आर.टी.ई. अधिनियम 2009 में बच्चों का अधिकार

अनुच्छेद 21 के तहत निशुल्क अनिवार्य शिक्षा लागु है साथ है शिक्षा के स्तर को तीन स्तर पर प्राथमिक माध्यमिक व उच्च शिक्षा के माध्यम में बाट दिया गया जिससे शिक्षा के स्तर को सुधार कर अच्छे गुणवत्ता युक्त शिक्षा छात्रों को प्राप्त हो इस प्रणाली में सामाजिक व परिवारिक स्पोर्ट छात्राओं को मिले जिससे वे इस डिजिटल युग में भी तकनीक व अभिभावक दोनो युक्त ज्ञान प्राप्त करे इसलिए माता पिता को भी कर्तव्य दिये गये एवं डिजिटली ई लर्निंग से ज्ञान हासिल कर सके साथ ही शिक्षक व अभिभावक बैठको की भी व्यवस्था की गई ताकि दोनों में समन्वय बनाकर छात्र हित पर कार्य किया जा सके भारत में आधुनिक शिक्षा के जनक देश के प्रथम भारत रत्न शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद जी की याद मे प्रारंभ की गई कि व शिक्षा के स्तर में सुधार लाना प्रमुख उद्देश्य भारत सरकार का रहा जिसमे शिक्षको की भी जिम्मेदारी दी गई कि वे प्रभावी शिक्षण पाठ योजना तैयार कर मुल्यांकन के साथ सुरक्षित व समावेशी वातावरण छात्रो को दे और आवश्यतानुसार व्यक्तिगत मार्गदर्शन भी करे व व्यवसायिक विकासक अभिभावक जुड़ाव भी रखे।

ज्ञान प्रणाली अतीत व वर्तमान के बीच सेतु :– ऋग्वैदिक अथवा पूर्व वैदिक का में ज्ञान का प्रमुख साधन वैदिक साहित हुआ करता था साथ ही इतिहास खगोल ज्यामितीय आदि का अध्ययन कर विषय के बारे मे ज्ञान अर्जित की जाती थी एवं शिक्षा में लौकिक विषय थी जो सुधारू चलती थी साथ हि अलग–अलग विद्यालय हुआ करता था जिसमे तक्षशिला नालंदा वल्लभी भी आदि प्राचीन है एवं गुरूकुल पद्धत्ति का चलन था प्राय शिक्षा मौखिक हुआ करती थी व्याख्यान या कहानी जैसी थी धीरे–धीरे समयानुसार शिक्षा प्रणाली में बदलाव आया 19वी शताब्दी में वायसराय लार्ड मैकाले जो कि एक अंग्रेज था ने विश्व विद्यालय स्थापित किया एवं शिक्षा सुधार हेतु अनेक समितिया आई जैसे वुड डिस्पैच हंटर आयोग आदि समितीयो द्वारा शिक्षा स्तर में गुणवत्ता पूर्ण सुधारने का प्रयास करते हुए अनेको विश्व विद्यालय की स्थापना की कमी को दूर करने हेतु पंयास रत रहा और इस तरह 3 बार नई शिक्षा नीति आयी प्रथम 1968 दूसरा 1986 तीसरा 2020 एन.ई.पी. 2020 के तहत जो कि वर्तमान यानि 21 वी शदी में मुख्य उद्देश्य नीति का अच्छे इंसानों का विकास करना है जिसमे तर्क संगत विचार कार्य करने से सक्षम

साहस वैज्ञानिक रचनात्मक नैतिक मूल्य का समावेश है जहा प्रेरणादायक शिक्षा का वातावरण हो भारत वैश्विक ज्ञान के क्षेत्र में सर्वशक्ति बनकर जीवंत समाज मे बदलाव लाये भारतीय होने का गर्व केवल विचार में नही बल्कि व्यवहार मे बुद्धि कार्य मे आये 2020 की शिक्षा नीति को व्यवस्था से तकनीकी से भरपूर ज्ञान का भंडारण व ड्राप आउट बच्चो की संख्या को कम कर बुनियादी आवश्यकता को पूरा करना साथ ही बच्चों की सहभागिता को बढ़ाना साथ ही छात्रों के लिए कोर्स चयन के विकल्प लचीले ढ़ंग का हो जिसमें वह स्वतंत्र होकर विषय को पढ़ने व समझने के लिए साथ ही प्रौण शिक्षा की व्यवस्था भारतीय भाषा में पढ़ने व सामग्री उपलब्ध कराना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर एकीकरण करना शिक्षक प्रशिक्षण आदि समग्र पूर्णतः व्यवस्था एन.ई.पी. 2020 में कि गई है जो हमारे देश में पुराने से नई तकनीक की ओर अग्रसर है।

निष्कर्ष :– भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूक्त व दूरस्थ ज्ञान प्राप्ति हेतु शिक्षा की व्यवस्था का पूर्ण विकास करते हुए भारत के सभी छात्र–छात्राओं शिक्षको व पालको को एक ही मंच में विभिन्न प्रकार के ज्ञान का भंडारण प्राप्त हो उसके लिए कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं को प्रारंभ किया जिसमे स्वयं ज्ञान समन्वय आदि अनेक ज्ञान का पिटारा युक्त शिक्षा के खजाने को लागु कर सब के लिए समग्र व समावेशी बना दिया शिक्षण स्तर का गुणात्मक विकास कर समाज को सतत् विकास व विकसित भारत की ओर अग्रसर कर रही है जिसमे ज्ञान कौशल सतत् विकास लक्ष्य जिसमे समावेशी गुणवत्ता युक्त शिक्षा को बढाया जा रहा है व शिक्षा की निर्धनतो को समाप्त करने की

ओर आगे बढ़ रही है व समाज के स्त्री–पुरूष बच्चे सभी के लिए शिक्षा को किफायती व्यवसायिक असमानता को दूर कर सार्वभौमिक पहुँच प्रदान कर रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्री इंदर सिंह परमार, ''भारत में शिक्षा का परिवर्तन, 2000 साइटिफिक कूटर पब्लिकेशन हाउस,
2. रमेश पोखरियाल निर्शक, ''शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, 2000, प्रभाव प्रकाशान दिल्ली
3. पंकज अरोड़ा, उषा शर्मा, ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–21 सिपरा पब्लिकेशन
4. डॉ. जूही समर्पण, डॉ. मोनिका उप्पल, ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–22 चुनौति और समाधान नेशल प्रेस पब्लिकेशन
5. Dr. Uma Singh, New education policy of India- 2021 श्री साई printo graphev
6. Dr. Nittam Chadel, The New National education policy of India, pacific book international and publisker,
7. कुरूक्षेत्र -2025
8. https.//www.education gov.in

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*